S.R.S.D. Memorial Shiksha Shodh Sansthan, Agra, India
UGC Sl. No.64431

INQUISITIVE TEACHER
A Peer Reviewed Refereed Research Journal
ONLINE ISSN-2455-5827
Volume V, Issue II, December 2018, pp. 150-154
www.srsshodhsansthan.org

''राजनीतिक दल लोकतंत्र का प्राण''

डॉ.पंकज राठौड़
व्याख्याता, राजनीतिविज्ञान विभाग, भूपाल नोबल्स स्नातकात्तर कन्या महाविद्यालय, राजसमन्द, राजस्थान

सारांश

आधुनिक विश्व में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली सर्वाधिक लोकप्रिय है। राजनीतिक दल आधुनिक राजनीति की जीवन डोर बन गए है। प्रत्येक आधुनिक राजनीतिक समाज में और लोकतंत्र में ये किसी न किसी रूप में अनिवार्यत विद्यमान होते है। लोकतंत्रीय शासन प्रणाली में राजनीतिक दलों का आधारभूत महत्व है, प्रत्येक लोकतंत्र में नागरिकों के राजनीति में प्रवेश का एकमात्र संस्थागत साधन राजनीतिक दल ही होतें है। लोकतंत्र में राजनीतिक दल ही चेतना के केन्द्र बिन्दु माने जाते है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्थाओं में राजनीतिक दलों की सर्वव्यापकता से यही निष्कर्ष निकलता है कि राजनीतिक विकास की स्थिति के लिए किसी भी राष्ट्र द्वारा राजनीतिक दलों के बिना काम चला पाना कठिन ही नहीं कदाचित असंभव हो गया है। अतः लोकतंत्रीय शासन व्यवस्था राजनीतिक दल पर आधारित होती है और राजनीतिक दल लोकमत के निर्माण और अभिव्यक्ति के सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन होते है।

प्रजातंत्र का आधारभूत सिद्धांत जनता और शासन के बीच सम्पर्क बनाए रखना है और इस प्रकार का सम्पर्क स्थापित करने का सबसे बड़ा साधन राजनीतिक दल है। हूबर के शब्दों में – ''प्रजातंत्रीय यंत्र के चालन में राजनीतिक दल तेल के तुल्य है''। सरकार के उसी समय ठीक प्रकार से कार्य किया जा सकता है जब शासन के विविध अंग परस्पर सहयोग करें और यह सहयोग राजनैतिक दलों के द्वारा ही सम्भव है।[i] राजनीतिक दल ऐसे स्वैच्छिक संगठन है या लोगों के संगठित समूह होते है जो समान दृष्टिकोण रखते है तथा जो संविधान के प्रावधानों के अनुरूप राष्ट्र को आगे बढाने के लिए राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। किसी दल की प्रकृति उसकी विचारधारा अथवा कार्यक्रम की प्राथमिकताओं तथा संगठनात्मक संरचनाओं से निर्धारित होती है। देश का विशाल आकार, भारतीय समाज की विभिन्नता, सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की ग्राह्यता, राजनीतिक प्रक्रियाओं तथा कई अन्य कारणों से अनेक राजनीतिक दलों का उदय हुआ है। वर्तमान में 6 राष्ट्रीय दल एवं अन्य मान्यता प्राप्त क्षेत्रीय दल है तथा पंजीकृत और गैर–मान्यता प्राप्त दल है।[ii] लोकतंत्र के पहियों के रूप में राजनीतिक दल अपरिहार्य है। राजनीतिक दल बहुत बड़ी सीमा तक हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग बन चुका है 'राजनीती' शब्द का उच्चारण करते समय उसमें राजनीतिक दलों की ध्वनि झंकृत होती है। लोकतंत्र चाहे उसका कोई भी स्वरुप क्यों न हो, राजनीतिक दलों की अनुपस्थिति में अकल्पनीय है। इसलिए उन्हें 'लोकतंत्र का प्राण' कहा गया है। दल प्रणाली के बिना लोकतंत्रात्मक शासन प्रणाली कार्य नहीं कर पाती है। शासन का चाहे संसदीय रूप हो या अध्यक्षात्मक दल प्रणाली के अभाव में उसका क्रियान्वयन असंभव है।[iii] लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था में राजनीतिक दल होना अनिवार्य है, क्योंकि राजनीतिक दल जनता का मत प्राप्त करके सरकार का निर्माण करते है। राजनीतिक दल ऐसे लोगो का

संगठन होता है जो सैद्धान्तिक रूप से एकमत होते है तथा सामूहिक नेतृत्व से चुनावों के माध्यम से सत्ता प्राप्त करने का प्रयास करते है। राजनीतिक दलों में परम्पराओं की विचारधारा, परस्पर स्वार्थ भावनाएं, मनोवैज्ञानिक कारण आदि के बन्धनों से संगठित रहते है।[iv]

राजनीतिक दल का अर्थ

राजनीतिक दल से हमारा अभिप्राय ऐसे व्यक्तियों के समुह से है जो कुछ समस्याओं के रूप में और उसके समाधान के सम्बन्ध में एक मत है जिन्होंने सामान्य उद्धेश्यों की प्राप्ति के लिए मिलकर वैध ढ़ंग से काम करने का निश्चय कर लिया है। न्यूमैन के शब्दों में – ''राजनीति दल एक स्वतंत्र समाज में नागरिकों के उस व्यवस्थित समुदाय को कहतें है जो शासनतंत्र को नियंत्रित करना चाहता है और उनके लिए जनसहमति में भाग लेकर अपने कुछ सदस्यों को सरकारी पदों पर भेजने का प्रयास करता है''। लास्की के शब्दों में – ''राजनीतिक दल देश में अधिनायकवाद से हमारी रक्षा करनें का सर्वश्रेष्ठ कवच है''।[v]

भारतीय दलीय व्यवस्था का संक्षिप्त इतिहास

1947 से 1976 तक कांग्रेस की केंद्र में सरकार बनी रही, 1967 में कांग्रेस अनेक राज्यों की विधान सभाओं में स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं कर सकी। 1977 के लोकसभा चुनाव में प्रथम बार केंद्र में कांग्रेस की सरकार नहीं बनी, विपक्षी दलों के सम्मेलन से बनी जनता पार्टी की सरकार बनी, इस समय कुछ ऐसा आभास होने लगा कि भारत में द्विदलीय पद्धति स्थापित होने जा रही है लेकिन यह भ्रम शीघ्र ही टूट गया। 1978 से राजनीतिक ध्रुवीकरण से विघटन व बिखराव प्रारम्भ हो गया, जनता पार्टी बिखर कर रह गई। 1980 के आम चुनाव में पुनः कांग्रेस केंद्र में सत्ता में आ गयी, 1984 में इंदिरा गाँधी की हत्या के पश्चात कांग्रेस राजीव गाँधी के नेतृत्व में पुनः बहुमत में आई। 1989 में भी कांग्रेस को सर्वाधिक सीटें मिली, 1991 में पुनः कांग्रेस सत्ता में आई जो 1996 तक रही फिर गठबंधन सरकारों का युग प्रारंभ हुआ।[vi]

लोकतंत्र में राजनीतिक दलों कि भूमिका

राजनीतिक दल प्रजातान्त्रिक शासन प्रणाली में प्रमुख राजनीतिक संस्था कही जा सकती है। बर्क कहतें है – ''दलीय प्रणाली चाहे वह पूर्ण रूप से भले के लिए अथवा बुरे के लिए पर स्वाधीन भारत के लिए वह अपरिहार्य है''। जनतंत्र में शासन का संचालन जनता के प्रतिनिधियों द्वारा होता है जो किसी न किसी राजनीतिक दल से संबंधित होते है इसलिए कहा जाता है – 'दल नहीं तो प्रजातंत्र नहीं', इसलिए राजनीतक दल को लोकतंत्र का प्राण कहा गया है। प्रो. मरियम के अनुसार – ''राजनीतिक दलों का कार्य अधिकारी वर्ग का चुनाव करना, सरकार को चलाना और उसकी आलोचना करना, राजनीतिक शिक्षण तथा व्यक्ति और सरकार के बीच मध्यस्थता का कार्य करना होता है''। राजनीतिक दलों का कार्य जनता में राजनीतिक जाग्रति लाना तथा लोगो के देश – विदेश की समस्याओं से अवगत करना भी है, वे जनता को समस्याओं के कारणों एवं हल से भी परिचित कराते है। लॉवेल के अनुसार – ''राजनीतिक दल राजनीतिक विचारों के दलाल होते है''। चुनाव के समय राजनीतिक दल अपने प्रत्याशियों का चुनाव करते है, उन्हें चुनाव मैदान में उतारते है, उनके लिए वोट मांगते है तथा उन्हें विजयी बनाने का प्रयास करते है।[vii] लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की भूमिका का सम्बन्ध है संसदीय शासन प्रणाली की अपेक्षा संसदीय शासन प्रणाली में इनकी भूमिका अधिक महत्वपूर्ण होती है संसदीय शासन प्रणाली में दल अनेक महत्वपूर्ण भूमिकाओ का निर्वाह करते है।

1. लोकमत का निर्माण करते है।
2. जनता को राजनीतिक प्रशिक्षण देते है।

3. निर्वाचन सम्बन्धी कार्य करते है।

वे सत्ता रूढ़ दल तथा विरोधी दल के रूप में कार्य करते है दल जनता और सरकार के बीच कड़ी का कार्य करते है , वे सामाजिक शिक्षा, संस्कृति आदि के क्षेत्र में कार्य करते है, वे किसी भी देश में क्रांति को रोकते है। मुनरो के अनुसार– "स्वंतंत्र राजनीतिक दलों द्वारा शासन प्रजातान्त्रिक शासन का ही दूसरा नाम है" वर्तमान प्रजातंत्र के युग में राजनीतिक दलों का महत्त्व है, जिसकी आकांशाएँ व आशाएँ अपनी दलीय व्यवस्था पर निर्भर है वही राजनीतिक गुरुत्वाकर्षण का केंद्र है" लोकतान्त्रिंक शासन के संचालन व उसकी सफलता के लिए राजनीतिक दल अनिवार्य है। लार्ड बाईस के अनुसार –"कोई बड़ा तथा स्वतंत्र देश उनके अस्तित्व के बिना नहीं रहा है और किसी ने यह प्रदर्शित नहीं किया है कि कोई प्रतिनिधि सरकार उसके बिना कैसे कार्य कर सकती है"।[viii]

प्रजातंत्र में बहु राजनीतिक दल

प्रजातंत्र में बहु राजनीतिक दल होते है और ऐसे भी प्रजातंत्र है जहाँ केवल एक ही राजनतिक दल है और जहाँ बहु राजनीतिक दल होते है, वह प्रजातंत्र उदार होता है। उदहारण – ब्रिटेन का प्रजातंत्र , यहाँ तीन राजनीतिक दल है कम्परवेटिव, लिबरल और लेबर। ये राजनीतिक दल प्रति पांच वर्ष चुनाव लड़ते है ब्रिटेन के प्रजातंत्र की तरह अमेरिका, फ्रांस और जर्मनी में भी प्रजातंत्र है।

प्रजातंत्र में एकल राजनीतिक दल

प्रजातंत्र का एक प्रकार एकल राजनीतिक दल होता है उदाहरण – अफ्रीका, केनिया और जिम्बाब्वे के किसी विधानसभा में उच्च जातियों के सदस्य अधिक होते है, निश्चित रूप से इनके निर्णय उच्च जातियों के हित में होगे। राजनीतिक दलों का मेनिफेस्टो या चुनाव कार्यक्रम किसी सामाजिक वर्ग का हितकारक है।[ix]

संवैधानिक साधनों के प्रयोग में आस्था

लोकतंत्र में किसी भी राजनीतिक दल के लिए यह आवश्यक है कि उसके सदस्यों में संवैधानिक साधनों के प्रयोग द्वारा शक्ति प्राप्त करने के प्रति आस्था होनी चाहिए। अपनी सुनिश्चित नीतियों, कार्यक्रमों और विचारो को मूर्त रूप देने के लिए उनमे संवैधानिक मार्ग का अनुसरण करने के प्रति कोई मतभेद नहीं होना चाहिए।[x]

क्षेत्रीय दलों का उदय

क्षेत्रीय दल के उदय से भारत में लोकतंत्रीकरण का प्रभाव व्यापक एवं गहरा हुआ है महिलाएँ, अनुसूचित जाति एवं जनजाति, पिछड़ी जाति के मतदाता और ग्रामीण मतदाताओं की राजनीतिक सहभागिता में तीव्र वृद्धि हुई है, क्षेत्रीय दल लोगों की लोकतान्त्रिक आकांक्षाओ के प्रमुख वाहक है जैसे विशाल बहुलवादी देश में क्षेत्रीय दलों की उपस्थिति स्वाभाविक है। क्षेत्रीय दलों के प्रभावी होने से भारतीय समाज में अधिक लोकतंत्रीकरण हुआ है तथा प्रत्येक समूह क्षेत्र के लोगो को सत्ता में सहभागिता प्राप्त हुई जो अत्यधिक सकारात्मक है।[xi]

राजनीतिक दल और उनके सामाजिक आधार

राजनीतिक दल देश की विभिन्न सामाजिक और आर्थिक उद्देश्यों को पूरा करने करने में सहायक है। किसी भी देश में राजनीतिक दलों की संख्या इस बात पर निर्भर करती है कि उस देश में विकास कितना है, सामजिक आधार का तात्पर्य यह है कि प्रजातंत्र शून्य में नहीं चलता। इसे चलाने वाले पंच, विधायक और सांसद किसी न किसी जाति, धर्म, संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले होते हैं ऐसी स्थिति में इन प्रतिनिधियों की जो सामजिक पृष्ठभूमि होती है, वही प्रजातंत्र की रचना करती है। उदाहरण के लिए यदि किसी विधानसभा में उच्च जातियों के सदस्य अधिक होते है तो निश्चित रूप से इनके निर्णय उच्च जातियों के हित में होगें। अतः राजनीतिशास्त्र के विद्वान सामजिक आधारों को राजनीतिक बुनियाद कहते है।[xii]

राजनीतिक दल में लोकतंत्र का संचालन

राजनीतिक दलों का सम्पर्क जनता से निरन्तर बना रहता है। विरोधी दल जनता की समस्याओं और कठिनाइयों को सरकार तक पहुँचाते रहते है इसलिए निरन्तर जनता के सम्पर्क में राजनीतिक दल रहते हैं और जनता के हित में नीति निर्माण का कार्य करवातें हैं। राजनीतिक दलों का प्रजातन्त्र में एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य विभिन्न जटिल विषयों पर लोकमत का निर्माण करवाते है।[गपपप] प्रजातंत्र में शासक दल का ही नहीं वरन् विरोधी दल का भी महत्व होता है। विरोधी दल शासन करने वाले राजनीतिक दल को मर्यादित तथा नियंत्रित रखने का कार्य करते है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि आधुनिक राजनीतिक जीवन में इन दलों का बड़ा महत्व है। और इसके बिना लोकतंत्र की सफलता संभव नहीं है।[गपअ]

निष्कर्ष

राजनीतिक दल लोकमत के निर्माण तथा अभिव्यक्ति के सर्वोत्तम साधन है वे अमूर्त मतदाताओं को मूर्त रूप देते है। वे निर्वाचनों में अपने प्रत्याशी खड़े करते है और अपने कार्यक्रमों और नीतियों का प्रचार कर मतदाताओं को प्रभावित करते है। निर्वाचन में विजय दल सरकार का निर्माण करते हैं। पराजित दल विपक्ष के रूप में आलोचना करते है। अतः इस प्रणाली से प्रतिनिधि शासन को चलायमान किया जाता है। भारत में प्रजातांत्रिक व्यवस्था है वह भारतीय संस्कृति, परम्परा भाषा और कला का ही एक स्वरुप है। प्रजातंत्र की अवधारणा उसकी धर्म विशेषता, अपने मूल में यूरोप की है, इसकी जड़े वहां है। यहाँ जब हम इसे असली जामा पहनते है तो हमारी सामजिक व्यवस्था इसे प्रभावित अवश्य करती है। दलीय व्यवस्था हर प्रकार की राजनीतिक व्यवस्था के लिए अनिवार्य व्यवस्था है चाहे वह साम्यवादी व्यवस्था हो, उदारवादी व्यवस्था हो या सर्वसत्ताधिकारवादी व्यवस्था के अंतर्गत दलीय व्यवस्था माना जाता है राजनीतिक दल चाहे वह सत्तारूढ़ हो या विरोधी दल हो दोनों भूमिका महत्वपूर्ण होते है। सरकार चलाना सत्तारूढ़ दल का काम नहीं बल्कि विरोधी दल का काम भी है, विरोधी दल विरोध करके भी सरकार को सही रास्ते पर चलने के लिए विवश करते है लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत राजनीतिक दल चाहे वह पक्ष में हो या प्रतिपक्ष में उनकी भूमिका को अनिवार्यतः स्वीकार किया जाता है। राजनीतिक दल आधुनिक राजनीति की जीवन डोर बन गए है। प्रत्येक आधुनिक राजनीतिक सम्बंध में और लोकतंत्र में ये किसी न किसी रूप में अनिवार्यतः विद्यमान होते है। लोकतंत्रीय शासन प्रणाली में राजनीतिक दलों का आधारभूत महत्व है प्रत्येक लोकतंत्र में नागरिको का एकमात्र संस्थागत साधन राजनीतिक दल ही होता है। लोकतंत्र में राजनीतीक दल ही चेतना के केंद्र बिंदु माने जाते है। अतः यह माना जाता है की लोकतंत्रीय शासन व्यवस्था लोकमत पर आधारित होती है और राजनीतिक दल इस लोकमत के निर्माण और उसकी अभिव्यक्ति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन होते है। राजनीतिक दल वे दल स्वैच्छिक संगठन अथवा लोगो के वे संगठित समूह है जो समान दृष्टिकोण रखते है तथा जो संविधान के प्रावधानों के अनुरूप राष्ट्र को आगे बढ़ाने के लिए राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने की कोशिश करते रहते है। आधुनिक लोकतान्त्रिक राज्य में इन राजनीतिक दलों का अत्यधिक महत्व है इसी कारण इन्हें ''लोकतंत्र का प्राण'' कहा गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- [i] राजनीति विज्ञान के मूलाधार, डॉ. पुखराज जैन, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा, 2006, पृ.स. 244, 245
- [ii] अनुराधा शर्मा, रोहित कुमार, भारतीय राज्य व्यवस्था एवं प्रशासन, अरिहन्त पब्लिकेशन्स लि. इण्डिया, पृ.स. 139
- [iii] डॉ. बी.एल.फडिया, प्रशासनिक संस्थाएँ, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा, 1960, पृ.स. 135
- [iv] प्रतियोगिता दर्पण ¼भारतीय राज्य व्यवस्था एवं शासन½, उपकार प्रकाशन, कोड नम्बर 794, पृ.स. 152

- [v]डॉ. बी.एल.फडिया, प्रशासनिक संस्थाएँ, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा, 1960, पृ.स. 135
- [vi] प्रतियोगिता दर्पण ¼भारतीय राज्य व्यवस्था एवं शासन½, उपकार प्रकाशन, कोड नम्बर 794, पृ.स. 152
- [vii] प्रो. एम. एल. गुप्ता, डॉ. डी. डी. शर्मा, समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा, पृ.स. 449
- [viii] संतोष कुमार सिंह, मधुलिका सिंह, संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग राजनीति विज्ञान, किरण कम्पटीशन टाईम्स इलाहबाद, पृ.स. 68
- [ix] एस. एल. दोषी, पी. सी. जैन, भारतीय समाज संरचना और परिवर्तन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस जयपुर, 2006, पृ.स. 297
- [x] अशोक शर्मा, भारत में प्रशासनिक संस्थाएं, आर.बी.एस. पब्लिशर्स जयपुर, 2007
- [xi] राजेश मिश्रा, राजनीति विज्ञान ¼एक समग्र अध्ययन½, सरस्वती आई.ए.एस. दिल्ली, 2015, पृ.स. 330
- [xii] एस. एल. दोषी, पी. सी. जैन, भारतीय समाज संरचना और परिवर्तन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस जयपुर, 2006, पृ.स. 297
- [xiii] अशोक शर्मा, भारत में प्रशासनिक संस्थाएं, आर.बी.एस. पब्लिशर्स जयपुर, 2007, पृ.स. 117,122,123
- [xiv] डॉ. पुखराज जैन, राजनीति विज्ञान के मूल आधार, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा, 2010, पृ.स. 240